भारतीय इतिहास के भारतीय स्तम्भ

डॉ. प्रवेश भारद्वाज*

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त हुए भारतीय इतिहास–लेखन में कतिपय विसंगतियाँ भी दिखलाई पड़ती हैं। अधिकांश आधुनिक इतिहासकारों द्वारा मात्र तथ्यों के संग्रहीकरण एवं प्रस्तुतीकरण का कार्य किया गया है जबकि उनके द्वारा सामान्यीकरण अथवा कुछ ऐतिहासिक नियमों के प्रतिपादन का प्रयास नहीं किया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त इतिहास लेखन में एक यह प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है कि कुछ निश्चित अवधारणों, यथा–धर्म निरपेक्षता अथवा साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे विषयों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। सरकार द्वारा प्रोत्साहित कुछ निश्चित क्षेत्रों में भी इतिहास–लेखन का कार्य स्वतंत्रोत्तर भारतवर्ष में हुआ है। इस काल की एक विशिष्ट प्रवृत्ति यह भी है कि इतिहास लेखक अतीत के उन पक्षों को, जो राष्ट्रीय अखण्डता अथवा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की दृष्टि से खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं, अपने इतिहास–लेखन में स्थान नहीं देते।

आधुनिक काल में भारतीय इतिहास–लेखन की विधा में नवीन परिवर्तन हो रहे हैं तथा इतिहास–लेखक इस दिशा में प्रयासरत हैं। इतिहास–लेखन विधा के अन्तर्गत अभिलेखात्मक सामग्री का उपयोग, निजी पत्रों का प्रयोग, स्थानी स्रोतों का प्रयोग, फील्ड अध्ययन, साक्षात्कार आदि का चलन निरन्तर बढ़ रहा है। आज आर्थिक इतिहास की ओर इतिहास लेखकों का ध्यान आकृष्ट हो रहा है। वर्ग संरचना एवं वर्ग चेतना पर भी कार्य हो रहे हैं। इतिहास लेखकों द्वारा अठारहवीं तथा उन्नीसवीं सदी के वाणिज्य, वित्त, राजस्व नीति एवं कृषि–सम्बन्धों आदि क्षेत्रों में कार्य किये गये हैं।

(1) आर.जी. भंडारकर (R.G. BHANDARKAR) (1837-1925 ई.)

वर्ष 1837 ई. में रत्नागिरी (महाराष्ट्र) जिले में भंडारकर का जन्म निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा बम्बई के एल्फिस्टन कॉलेज में हुई तथा बाद में वे यहीं प्राच्य भाषाओं के प्रोफेसर बने। भंडारकर की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं– (1) Early History of the Deccan. (2) A Peep into the Early History of India. (3) VaishanÂvism, Shaivaism and Minor Religious Systems. इन कृतियों के अलावा भंडारकर ने ताम्रपत्रों, अभिलेखों आदि पर भी अनेक लेखों की रचना की। भंडारकर के इन प्रयासों से प्राचीन भारतीय इतिहास

***एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, वाराणसी (बी.एच.यू.)**

के कालक्रम को सुनिश्चित करने में अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई है। भंडारकर की इतिहास–लेखन–प्रविधि के सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने सर्वप्रथम सम्पूर्ण एकत्र सामग्री का विधिवत् आलोचनात्मक परीक्षण किया और तदुपरान्त पूर्ण दृढ़ विश्वास सहित अपने विचार प्रकट किये। भंडारकर की यह मान्यता थी कि मात्र राजनीतिक इतिहास ही सम्पूर्ण इतिहास नहीं है वरन् सच्चे अर्थों में इतिहास को सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक पक्षों का भी समावेश करना चाहिए। उनका विश्वास था कि एक इतिहासकार का कार्य न्यायाधीश के समान है। अतः इतिहासकार को अतीत का अधिवक्ता होने से बचना चाहिए।

(2) काशी प्रसाद जायसवाल (K.P. JAYASWAL) (1881-1937 ई.)

काशी प्रसाद जायसवाल का जन्म मिर्जापुर के एक धनाढ्य व्यापारी–परिवार में हुआ था। उनकी उच्च शिक्षा ऑक्सफोर्ड में हुई। 1911 ई. में उन्होंने कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत करनी प्रारम्भ की। 1914 ई. में उन्होंने 'Bihar and Orissa Research Society' स्थापित करने में महत्वपूर्ण भागीदारी की। इस संस्था द्वारा 1915 ई. से 'Journal of the Bihar and Orissa Research' का प्रकाशन किया गया। जायसवाल इस पत्रिका के संपादक थे तथा उन्होंने इस पत्रिका में अनेक लेख लिखे। उनकी प्रमुख कृतियाँ 'The Hindu Polity' rFkk 'History of India' थीं। उन्होंने कुछ अप्रकाशित ग्रंथों का सम्पादन अपनी टिप्पणियों सहित किया। इन ग्रंथों में चन्द्रशेखर कृत 'राजन्ति रत्नाकर' भट्टस्वामी कृत 'अध्यदर्शटक' तथा नागार्जुन कृत 'विग्रहवयव्रत्तनी' सम्मिलित है। जायसवाल द्वारा मनु और याज्ञवल्क्य पर कलकत्ता विश्वविद्यालय में बारह व्याख्यान दिये गए। भारतीय इतिहास के लेखन कार्य में जायसवाल ने पुराणों, सिक्कों, अभिलेखों तथा पुरातात्विक स्रोतों का उपयोग किया है। उन्होंने 600 ई.पू. से लेकर 800 ई. तक के नेपाल के इतिहास का लेखन कार्य भी किया है। जायसवाल द्वारा विभिन्न महत्वपूर्ण अभिलेखों को पढ़ने का भी मौलिक कार्य किया गया है। अशोक के अभिलेख, हाथी गुम्फा अभिलेख, भुवनेश्वर मन्दिर के अभिलेख, अयोध्या के शुंग अभिलेख, समुद्रगुप्त का प्रयाग अभिलेख आदि इनमें सम्मिलित है। पौराणिक सिक्कों तथा शुंगकालीन सिक्कों पर जायसवाल द्वारा लेख लिखे गए।

(3) हेमचन्द्र रायचौधरी (H.C. RAICHOUDHARY) (1892-1957 ई.)

अपने छात्र जीवन से ही अति मेधावी रहे हेमचन्द्र रायचौधरी प्रेसीडेन्सी कॉलेज में इतिहास के व्याख्याता तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के व्याख्याता रहे। रायचौधरी ने प्राचीन भारतीय इतिहास के क्षेत्र में विस्तृत रूप से लेखन कार्य किया। रायचौधरी की प्रमुख पुस्तकें निम्नलिखित हैं– (1) The Political History of Ancient India from Accession of Parikshit

to the Extinction of the Gupta Empire. (2) Materials for the Study of Early History of the Vaishnava Sect. (3) Studies in India Antiquities. रायचौधरी की उपरोक्त कृतियाँ विद्वानों द्वारा स्तरीय स्वीकार की गई हैं। उनके द्वारा इतिहास के कतिपय सर्वथा नवीन तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है, जो उसके पूर्व लोगों को ज्ञात नहीं थे। वास्तव में रायचौधरी की कृतियों का प्रत्येक अध्याय एक शोध कार्य है और इस दिशा में उनका एक नवीन मौलिक योगदान है।

(4) जदुनाथ सरकार (J.N. SARKAR) (1870-1958 ई.)

बंगाल के समृद्ध जमींदार परिवार में जन्मे जदुनाथ सरकार अपने विद्यार्थी जीवन से ही अत्यन्त प्रतिभाशाली थे। अपने कार्यजीवन का प्रारम्भ जदुनाथ सरकार ने रिपन कॉलेज कलकत्ता में अंग्रेजी के व्याख्याता के रूप में किया। तत्पश्चात वे प्रेसीडेन्सी कॉलेज तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे। अंग्रेजी के विद्वान् के साथ–साथ जदुनाथ सरकार की रुचि तथा पैठ इतिहास में भी समान रूप से रही। इतिहास के क्षेत्र में उनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं – (1) A History of Aurangzeb (In Five Volumes). (2) Fall of the Mughal Empire (in four volumes). (3) Shaivaji and his times. (4) A Military History of India. इसके अतिरिक्त जदुनाथ सरकार ने इतिहास पर अनेक विद्वतापूर्ण लेख भी लिखे। 'Cambridge History of India' के लिए जदुनाथ सरकार ने चार अध्याय लिखे तथा 'Modern Review' नामक पत्रिका में उनके साठ से भी अधिक लेख छपे। अपने इतिहास–लेखन के अन्तर्गत जदुनाथ सरकार ने ऐतिहासिक तथ्यों के निष्पक्ष विवेचन तथा प्रस्तुतीकरण पर बल दिया। उनके इतिहास–लेखन में शोध प्रवृत्ति की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। समकालीन समस्त उपलब्ध ऐतिहासिक–स्रोतों का जदुनाथ सरकार ने समुचित प्रयोग इतिहास–लेखन में किया। उनकी इतिहास–लेखन एवं शोध प्रविधि में मानचित्रों, पहचान, कालानुक्रम एवं पुष्टिकरण का महत्वपूर्ण स्थान है।

(5) के.एम. पणिक्कर (K.M. Panikkar) (1894-1963 ई.)

के.एम. पणिक्कर का जन्म 1894 ई. में केरल के कयालम ग्राम में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा त्रिवेन्द्रम में हुई। 1914 ई. में उच्च शिक्षा हेतु पणिक्कर ऑक्सफोर्ड गए। ऑक्सफोर्ड में उनकी मुलाकात प्रसिद्ध लेखक डिकिन्सन से हुई। ऑक्सफोर्ड प्रवास के दौरान पणिक्कर ने एक साहित्यिक मंच का गठन किया तथा प्रेस के लिए लेखन–कार्य प्रारम्भ किया। उनका प्रथम लेख हंगरी के स्वतंत्रता आन्दोलन पर था जो मद्रास की इण्डियन रिव्यू पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उनके अन्य लेख द मार्डन रिव्यू, द हिन्दुस्तान रिव्यू तथा कॉमन वील आदि पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए। The Problems of Greater India नामक उनका लेख

अत्यधिक चर्चित एवं पुरस्कृत हुआ। के.एम. पणिक्कर की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) Shri Harsha of Kanauj. (2) Origin and Evolution of Kingship in India. (3) Malabar and Portuguese. (4) Malabar and the Dutch. (5) Indian States and the Government of India. (6) Geographical Factors in Indian History. (7) India and the Indian Ocean.

अपने कार्य–जीवन में पणिक्कर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में इतिहास के उपाचार्य पदों पर रहे। तदुपरान्त कुछ समय के लिए हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादक के रूप में उन्होंने कार्य किया। जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालय एवं मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर भी के. एम. पणिक्कर असीन रहे। उनकी दो पुस्तकें उनके मरणोपरांत प्रकाशित हुई– (1) India Past and Present. (2) The Foundations of New India. पणिक्कर का विचार था कि आधुनिक भारतवर्ष में प्राच्य एवं पाश्चात्य संस्कृतियों का सम्मिलन विद्यमान है तथा हिन्दू धर्म व संस्कृति को समृद्ध बनाने के लिए उत्तरी भारतवर्ष के साथ–साथ दक्षिणी भारतवर्ष का भी समान योगदान है। उनके विचार में सामाजिक भावना का विभाजन हिन्दू समाज की विलक्षण विशेषता है तथा यह विभाजन सयुंक्त परिवार एवं जाति–प्रथा के कारण है। पणिक्कर ने कहा कि भारत में ब्रिटिश शासन जानबूझकर 'विदेशी' बना रहा; जबकि विदेशी होने के बावजूद मुगल भारतीय इतिहास व संस्कृति का 'एक अभिन्न अंग' बन गए। भारतीय इतिहास के स्वरूप–निर्धारण में पणिक्कर ने हिन्द महासागर के प्रभाव को प्रदर्शित करने का प्रयास भी किया। पणिक्कर परम्परागत रूप से प्रचलित उस इतिहास–लेखन से सन्तुष्ट नहीं थे, जो अधिकांशतः उन यूरोपीय लेखकों को आधार बनाकर लिखा जाता था जिन्हें स्वयं ही भारतीय इतिहास व संस्कृति का समुचित ज्ञान न था तथा जिनके इतिहास–लेखन का उद्देश्य मात्र यूरोपीय श्रेष्ठता को प्रदर्शित करना था। उन्होंने यह मत प्रतिपादित किया कि भारतवर्ष में यूरोपियनों के प्रवेश के बाद से ही 'आर्य श्रेष्ठता' की सनक लोगों में सवार हुई जबकि द्रविड़ संस्कृति भी समान रूप से महत्वपूर्ण थी। पणिक्कर के अनुसार इतिहास को मात्र राजाओं तथा राजवंशों के विवरणों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि इतिहास के अन्तर्गत सभ्यता के विकास का भी उल्लेख किया जाना चाहिए। पणिक्कर इतिहास का विभाजन विभिन्न युगों के अन्तर्गत करने की प्रवृत्ति से भी सहमत नहीं थे क्योंकि इन युगों का निश्चित रूप से सीमांकन किया जाना अत्यधिक कठिन है। डॉ. आर. सी. शर्मा के अनुसार, "His presidential address to the India History Congress at Calcutta in December 1955, demonstrates his commitment to History and shows his vast contribution to historiography." (दिसम्बर 1955 ई. में

कलकत्ता में भारतीय इतिहास कांग्रेस के अपने अध्यक्षीय भाषण द्वारा इतिहास के प्रति उनका समर्पण तथा इतिहास–लेखन के प्रति उनका योगदान प्रदर्शित होता है।)

(6) के.ए. नीलकांत शास्त्री (N. SHASTRI)

नीलकांत शास्त्री वर्ष 1872 ई. में तिरुनावली में उत्पन्न हुए। उनकी शिक्षा मद्रास में हुई। अपने कार्यजीवन का प्रारम्भ नीलकांत शास्त्री ने तिरुनावली में इतिहास–व्याख्याता के रूप में किया। तदुपरान्त के मद्रास विश्वविद्यालय से जुड़े रहे। मद्रास विश्वविद्यालय में वे भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व के प्रोफेसर रहे। इतिहास के प्रति प्रारम्भ से ही नीलकांत शास्त्री का लगाव था। उनकी इच्छा तमिल प्रदेश के विशेष पक्षों पर लेखन–कार्य करने की थी तथा वे उसे भारतीय इतिहास के ही एक भाग के रूप में प्रतिस्थापित करना चाहते थे। इस हेतु नीलकांत शास्त्री ने पुरातत्व विज्ञान तथा संस्कृत भाषा के अपने विशद ज्ञान का उपयोग किया। नीलकांत शास्त्री की प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं :–

(1) History of South India. (2) The Development of Religion in South India. (3) The Pandyan Kingdom. (4) Foreign Notices of South India. (5) The Cholas.

उपरोक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त नीलकांत शास्त्री द्वारा 'Comprehensive History of India' में दक्षिणी भारतीय इतिहास पर कुछ अध्याय लिखे गए। वास्तव में भारतीय इतिहास–लेखन परम्परा में नीलकांत शास्त्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने दक्षिणी भारतवर्ष के इतिहास से सम्बन्धित अनेक नवीन पक्षों को प्रथम बार उद्घाटित किया और इस प्रकार भारतीय इतिहास–लेखन को संतुलन एवं पूर्णता प्रदान की।

(7) इरफान हबीब (IRFAN HABIB)

वर्ष 1931 ई. में जन्मे इरफान हबीब ने अपने कार्य जीवन का प्रारम्भ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में व्याख्याता के रूप में किया। बाद में वे इसी विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर पद पर आसीन हुए। इतिहास–लेखन की विरासत उन्हें अपने विद्वान् इतिहासकार पिता मोहम्मद हबीब से मिली। इरफान हबीर मध्यकालीन भारतीय इतिहास के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त विद्वान् हैं। इरफान हबीब ऐतिहासिक शोध–विधा के विशेषज्ञ होने के कारण सुप्रसिद्ध हैं तथा अनेक शोध पत्रिकाओं तथा शोध–संस्थाओं से वे जुड़े रहे हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं :–

(1) The Agrarian System of Mughal India. (2) An Atlas of the Mughal Empire. (3) The Cambridge Economic History of India (Edited). (4) Medieval India (Edited).

इन ग्रंथों के अतिरिक्त इरफान हबीब ने इतिहास पर अनेक व्याख्यान एवं शोधपत्र भी प्रस्तुत किये हैं, जो उनके इतिहास–लेखन में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनमें निम्नांकित उल्लेखीय हैं–

(1) Problems of Marxist Historiography. (2) Caste and Money in Indian History. (3) Interpreting Indian History.

इरफान हबीब भारतीय इतिहास की व्याख्या जाति–प्रथा के विश्लेषण से प्रारम्भ करते हैं जिसे वे भारत की अद्वितीय सामाजिक संस्था स्वीकार करते हैं। जाति प्रथा को उन्होंने वर्ग–शोषण के प्रमुख स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया। इरफान हबीब साम्प्रदायिक शैली के इतिहास–लेखन की निन्दा करते हुए इतिहास को साम्प्रदायिकता के प्रभाव से मुक्त करने पर बल देते हैं। उन्होंने इतिहास में राजनैतिक तथा आर्थिक भूगोल के महत्व को मानचित्रों द्वारा समझाया है। 'An Atlas of the Mughal Emjpire' इस दिशा में इरफान हबीब का एक अद्वितीय प्रयास है। उन्होंने उत्पादन तकनीक के इतिहास की दिशा में इतिहासकारों द्वारा कार्य किये जाने का आह्वान किया है। इस प्रकार इरफान हबीब द्वारा भारतीय इतिहास–लेखन विधा के अन्तर्गत कृषि एवं आर्थिक इतिहास के क्षेत्र में विस्तृत एवं शोध–प्रधान कार्य किया गया है।

संदर्भ –

1. स्मिथ, विन्सेण्ट आर्थर : रूलर्स ऑफ इण्डिया सीरीज में 'अशोक, द बुद्धिस्ट एम्परर ऑफ इण्डिया (1910 ई.) तीन संस्करणों में प्रकाशित, दूसरा संस्करण 1909 ई. में तीसरी 1920 ई. में। अंग्रेजी भाषा में भारतीय सम्राट पर यह प्रथम ग्रन्थ था।
2. स्मिथ, विन्सेण्ट आर्थर : ए हिस्ट्री ऑफ़ फाइन आर्ट इन इण्डिया ऐण्ड सीलोन, क्लेरेण्डन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 1911 ई., 1930, एवं 1939 ई. के संस्करण।
3. सेन, एस.पी. : हिस्टोरियन्स ऐण्ड हिस्टोरियोग्रैफी इन मार्डन इण्डिया; भण्डारकर, रामकृष्ण गोपाल : कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड 1, पूना, 1933।
4. Jayaswal, K.P. : Hindu Polity, Calcutta, 1924 (First Edition).
5. Prasad, Beni : The State in Ancient India, Allahabad, 1982.
6. Bandarkar, D.R. : Some Aspects of Ancient Indian Polity, Benares, 1929.
7. Dikshitar, V.R.R. : Maurya Polity, Madras, 1932.
8. रायचौधरी, हेमचन्द्र : प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, किताब महल, इलाहाबाद, 1980 ई. (द्वितीय संस्करण)।